CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सूर्यपुराणम्.

३९५८

G

श्रीलक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर.
देवप्रयाग ([illegible])
व्यवस्थापक- पं. चक्रधरजोशी

४८६
CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्री ॥

अथ सूर्यपुराण ।

जिसको

श्यामलाल श्रीकृष्णलाल ने

मुम्बई-

मित्र छापाखाने में छापकर प्रसिद्ध

किया

श्रीलक्ष्मीपुर - विद्यामन्दिर.
संवत् १९६३ शक १८२८.
देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
व्यवस्थापक- पं. चक्रधरजोशी

सर्व प्रकारका हक्क यंत्रा धीशने अपने रक्खा है ।

४८६

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

। अथ सूर्यपुराण ।

दोहा ॥

बंदि कंज पद जोरिकै, श्रीपति गौरिगणेश ।
तुलसीदास कहते सुयश, वरनौंकथा दिनेश ॥
वंदौं चरणनि हृदयधरि, प्रेम भक्तिमनलाय ।
महिमा अगम अपारहै, साहब ज्ञानसहाय ॥

चौ० सूर्य देवतासुमिरौं तोहीं । सुमिरत ज्ञान बुद्धिदे मोहीं ॥ ज्योति स्वरूप भानुवलवाना । तेजप्रताप अग्नि समाना ॥ तुमआदित्यपरमेश्वर स्वामी । अलखनिरंजनअंतरजामी ॥ बरणि न जाय जोतिकै लीला । धर्मधुरंधर परम

श्रीलक्ष्मीधर - विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
व्यवस्थापक- पं. चक्रधरजोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुशीला॥ज्योतिकलाचहुंओरविराजै। जगमगकाननकुण्डलछाजै॥नीलबरन वर हय असवारी। ज्ञान निधान धर्म व्रतधारी। तासुकथा मैं कहौं बखानी। पुरषोत्तम आनन्दघनज्ञानी॥आदित महिमाअगमअपारा॥तीनिभुवनजेहि छबिउजिआरा।

दो०-आदितकथापुनीतअति,गावहिंशम्भुसुजान तीनलोक छवि ज्योतिमय,करोप्रतापबखान॥

चौ० सुनहु उमा आदित परतापा बरनौं विमल सूर्य कर जापा॥ नाथ महातम सुनहु भवानी। कहौं पुनीत कथा सुभवानी॥ बांझसुनें एकमास पुराना।मनक्रमवचन धरैव्रतध्याना॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

द्वादश वर्ष करैं अतवारा। नैमधर्म एक मधुर अहारा॥ कुशा डसाय करैं बिश्रामा। हर्षित जपैं सूर्यकरनामा॥ आदितवासर जवहीं आवै। सुनिपुरान अरु विप्रजेंवावै॥ इतनी टेक धरैं तियजवहीं होंहिं दयालदयानिधितवहीं॥ होंहिपांचसुत अग्निसमाना। धर्मधुरंधर ज्ञान निधाना॥ तिनसों जीतिसकै नहिं कोई विद्यामान सुलक्षण होई॥

दोहा—बांझकथामनलायकैं टेकधरैं व्रतध्यान।
निश्चैउपजैं पांचसुत योधा अग्निसमान॥

इतिश्रीमहापुराणे सूर्यमहात्म्य बांझस्त्री पुत्रजननोनामप्रथमोऽध्यायः १

चौ०कथा कहौं रबि अमृतबानी। मन अस्थिर करिसुनहु भवानी। कुष्टहरन

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

होई जाके अंगा ॥ सुनै मनुजसो भानु प्रसंगा ॥ रविदिन भोजनकरैअलौना। पुष्पसुबास चढावै दौंना॥विप्रबोलरवि होम करावै। सोइभस्मले अंगलगावै॥ निश्चय कुष्टघरनक्षयजाई।धनमाहिमा है सूर्य गुसाईं ॥

दोहा—जाके कुष्टशरीर में, सो नितसुनैं पुरान
निश्चै सूर्य प्रतापते, पावै काया दान ॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्येसूर्यपुराणकुष्टनिवारणंनाम द्वितीयोऽध्यायः २॥

चौ०सूर्यकथामैंकहौंवखानी । मनसुचित्तहोइसुनहुभवानी ॥ जाकेवरन अंगमहहोई ।सूरजकथापाठकरसोई॥ करैपांचव्रतनरअतवारा ।नेमधर्मएक मधुरअहारा॥चन्दनअगरलेपतनकर-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ई । निशिदिनध्यानसूर्यपरधरई ॥ निश्चै अंगवरनामिटिजाई । धनिमहिमाहै सूर्यगोसाईं ॥ भानुचरितपढैमनलाई । निश्चैकुष्टबरनक्षयजाई ॥

दोहा—जाके उपजै कुष्ट जो, सो नित सुनैपुरान।
धनिमहिमा आदित्यके करों प्रतापवखान॥

चौ० सूर्यकथामैंकहौंबुझाई । मनक्रम वचनसुनोहितलाई ॥ जोनरहोइअन्ध युगलोचन।सोयहकथासुनैदुखमोचन। करैलोनविनुएकअहारा । विविधिभांतिकरनंमन्त्रचारा ॥ पीपरतरुतरसुनै पुराना । पावैलोचनअन्धसुजाना ॥ अंधालोचननिश्चैपावै । जोयहकथा सुचितमनलावै ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दोहा--अंधलहै निश्चैनयन जोजाने प्रभुएक।
पुलकित प्रेम पुनीत अति धरैकथापरटेक।

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्येअंधलोचनप्राप्तिकथानामतृतीयोऽध्यायः

चौ० यात्राजोनरकरैविदेशा। सुनि तसुनैपुरानसुरेसा॥ निश्चैतासुसकल शुभहोई। लाभभवनचलिआवैसोई॥ जोसंततरहहिंनअधिकारी॥ सोयह कथाकरेअधिकारी। निश्चैरिनीसकल मिटिजाई। धनिमहिमाहैसूर्यगोसाईं।

दोहा—यात्राको नरजवचलै,तबयहसुनैपुरान।
निश्चैमनवांछितसकलपुरवहिंश्रीभगवान

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्येमनवांछितदातारोनामचतुर्थोऽध्यायः।

चौ० एसीमहिमाआदितदेवा। कर- हिंजासुसुरनरमुनिसेवा॥ मिटैगाद निश्चैमनतासू। पुलकप्रेममनहर्षहु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लासू ॥ दीनानाथनिरंजनसाईं । महि
माजाकरबरणिनजाई ॥ सूर्यकथामैं
कहौंबखानी । मनअस्थिरकरिसुनोभ
वानी ॥ करैदण्डवतअरुव्रतध्याना ।
सोनतुलैयहकथासमाना ॥ तेजप्रताप
बरणिनहिंजाई । सूर्यचरित्रसुनहुमन
लाई ॥ कहौशंभुयहकथापुनीता । रवि
प्रतापमैंभयोअजीता ॥

दोहा—जामहिमाआदित्यकी.बरनौंप्रेमउछाह।
सुनोउमाअतिपुलकितन,कीरतिप्रभुअवगाह॥

चौ० कहौंपुनीतकथाशुभवानी । ब
हुरिमहातमसुनहुभवानी ॥ कातिक
चैतपुनीतदिनभारी । साजहिंअरघम
कलनरनारी ॥ चंदनअगरकपूरकीवा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ती । पूजाभक्तिकरैंबहुभांती ॥ मनो
कामनाजोनरराखै । पुलकितहोइभा
नुगुनभाखै ॥ तेहिकल्यानकरैंभगवा
ना । तेजपुंजप्रभुकृपानिधाना ॥
दोहा·लीलाअगमअपारप्रभु.कृपासिंधुभगवान
बरनौंकथापुनीतयह, मनअस्थिरकरध्यान ॥
चौ० सुनहुउमायहचरितअपारा ।
भानुमहातमबहुविस्तारा ॥ सिंहलदी
पनगरयकनाऊ । तहांनिवासपरीक्षित
राऊ ॥ तहांपुनीतधर्मनरनारी । तासु
भवनएककन्यकुवांरी ॥ सोनितकरै
भानुकीपूजा । सेवैसूर्यऔरनहिंदूजा ॥
श्रद्धानेमकथामनलाई । करैहर्षसाशुभ
दिनराई ॥ तासुभवनप्रभुकरैंकलेवा ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तीनलोकनहिंजानैभेवा ॥ एकसमय
अतिअचरजभयऊ । सुरसरितीरग-
मनतीहिठयऊ ॥ चीरउतारिभूमिपर
धरेऊ । कन्यापगजलभीतरधरेऊ ।
मज्जनकरनलगीसोबाला । हियेबिराज
तमोतीमाला ॥ तेहिअवसरनारदमुनि
आये । कन्यादेखिबहुतसुखपाये । ठा
ढभयेमुनिसुरसरितीरा । लीन्हउठंग
सुताकरचीरा ॥ कन्याजलमैंकरैपुकारा
मुनिपटदीजैधर्मविचारा ॥ कहनारद
सुनुकन्याबाता । हमसनकरहुपुरुषकर
नाता ॥ सुनुमुनिज्ञानीभयेतुमबौरा ।
ऐसीबचमकहीजानिऔरा ॥ असबानी
कहंलहेउमुनीसा ॥ हमअसकन्याला

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

खपचींसा । बिनतीऔरसुनहुममबा-
नी । देउवसनतुममुनिविज्ञानी ॥
नगननारिजलमहंखड़ी, कहमुनिमनकरजोर ।
कृपासिंधुज्ञाताधरम, अम्बर दीजै मोर ॥

चौ० जबकन्याबहु बिनतीलाई ।
तेहिछननारदरहे लजाई ॥ अंबर दै
मुनिभवन सिधाये । तहं तबहीं श्रीशं
करआये । मुनियहअतिअजगुतिसों
कीन्हा ॥ सो आदित सेकहवेलीन्हा
जहं मैं करतरहीअसनाना अंबरलैगये
मुनिविज्ञाना ॥ ताहिसमयशिवतहां
सिधारे । गौरवरनसंग गिरिजाधारे ॥
शक्तिसहितप्रभुनायेमाथा । हर्षित
शम्भुदेखिमुनिनाथा ॥ कुशलकही-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dey Prayag. Digitized by eGangotri

मुनिशिवमुसकाई । बैठनकहिसबकथा बुझाई ॥ पूछाप्रभुतबशिवकरजोरी नाथसुनहु यह विनतीमोरी ॥ कहुअ- पराधकीन्हमुनिभारी । सोअबमोमन कहहु विचारी ॥ तबप्रभुकहासुनहु हो भोरा । कहुकन्या सेवकाहितमोरा ॥ सुनहु हियाधरिके मुनिज्ञानी । कियो कुदृष्टकुधर्म न जानी । कारणसोइशा पतबदयऊ ॥ ताते अंगबरनमुनिभय ऊ ॥ इतनाकहिमुनिमनमुसकाना ॥ ज्ञानहीनतबमुनी पहिंचाना ॥बैन सन त प्रभुक्रोधितभयऊ । कन्यासंगलै मु निपहंगयऊ ॥

दोहा-बैनसुनतक्रोधितभये, क्रोध न हियेसमाय।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कौतुककीन्हअयुक्ततुम, तोसनकहहुंवुझाय॥
चौ० जोरिपानि मुनिवचन सुनाये
धारिपदकमलसूर्य गुनगाये ॥ कहप्रभु
सुनुमुनिवचन हमारी ॥ भामासन अ
पराधहिमारी ॥ यह अपराध क्षमाप्र
भुकीजे । दीनानाथ अनुग्रह दीजे ॥
तवप्रभु कहासुनो ममवानी । उतके
लोग सकलअज्ञानी ॥ तेहि अपराध
लेहु मुनिशापा । जसकीन्हेउ तसभुक.
तहु आपा ॥ ॥ दोहा ॥
त्रिभुवनस्वामी मोहिपर, करहुज्योतिपरकास
हरषितगावाहिगुनाबिमल, जहांमोरभवबास ॥

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्ये पंचमोऽध्यायः ॥५॥

चौ० पंपापुर एकनगरकोनाऊ । ह

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लधर विप्रतहांकरनाऊ ॥ नगरबसैमा नहु कैलासा ॥ धर्मकथातहं होइप्रका· शा ॥ पूजनकरैंभानुदिनराती । निस दिनटेकधरै बहुभांती ॥ कोटग्रगिनि चारिहुदिशिमाहीं । श्रीसूर्यको आश्र मनाहीं ॥ रतनजटितसरतहांसुहावा कनकघाटचहुंओरबनावा ॥ तहांखंभ एकपरमाबिशाला । शतयोजन सो उ- च्चरसाला । तेहि खम्भा आदित कर वासी । प्रातखम्भ सोलागग्रकासा ॥ योजन लक्षसो उदैकराही । योजनसह सएकपलजाहीं ॥प्रातहोतउदयाचलपा सा । ग्रस्ताचलपर कराहिं निवासा ॥ यहिविधि ग्रादितग्रावहिं जाहीं । स

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मुझ पुनीतकथामनमाहीं ॥ आदित कथा सुनहुमनलाई । मैं तोहि अर्थ कहौं समुझाई ॥ ॥ दोहा ॥

धन्यभान ईश्वर प्रभु. महिमा अगम अपार ।
तीनिलोकछविज्योतिमय, हैजाकरउजियार॥
कुष्ठी ध्यावै भक्तिकर. पावै कायादान ।
अन्तरयामी दयानिधि. कृपाकरहि भगवान॥
सुरनरमुनिअस्तुति करहिं.हितप्रसन्नभगवान
जोमनहितव्रतकरैनर. श्रद्धाप्रीति समान ॥
सवगुणआगरबुद्धिवर. सुन्दरशील निधान ।
मनवचक्रमतेंहर्षयुत. जोनरकरहिं वखान ॥

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्ये षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

चौ॰गिरिजाकहसोकहोगुसाईं । सो मोहिअर्थ कहो समुझाई ॥ कहनलगे शिवकथारसाला । जोहिविधिउगाहिं पू

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वैकूपाला ॥ गिरिजासुनहुकथामनला
ई। मैं तोहिअर्थकहौंसमुझाई। पूरब
दिसएकश्रीपुर देसा। तहां के राजासूर्य
महेशा ॥ करै सदाआदितकीपूजा।
सेवैसूर्य औरनाहिंदूजा ॥ यहिबिधिस
कलनगरउजियारा। तहांएकहै अगम
पहारा। सहसकोसपरबतपरमाना। ब
सैतहांआदितबलवाना। उभैजामतहां
करै निवासा। पुनिपाश्चिमदिशि कर
हि प्रकाशा। मनबचकर्मकथाबरगाई
सूर्यचरित विधितुमहिंसुनाई॥ सुनुगि
रिजासुन्दरयह बानी। बलप्रताप सुनि
मनहरषानी ॥ धन्यभानुजिनकै यह

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लीला । धर्मधुरंधरपरमसुशीला ॥ जो
नरकथासूर्यकी गावै । चढिविमानवै
कुंठ सिधावै ॥ सूर्यचरितसुनि अमृत
बानी अस्तुतिहरषितकरै भवानी ॥

छन्द॥ हजगस्वामी अन्तरयामीजो
तिकला छबि उदितमहा ।गुननीति नि
धाना श्रीभगवानाकरा कृपामोहिंधर्म
महा॥छविज्योति बिराजै कुण्डलराजै
तबप्रताप माहमाबरना॥तवहेतघनेरा
सबप्रभु तेरा लतनाम पातक हरना॥
करहुकृपाप्रभुमोहिंपर अतिछबिजोतिबिराज ।
तेजात्रिपुजातिहुंलोकमहंज यजययजयकहराज ॥
इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्येपूर्वदिशोदयवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चौ० उत्तरदिशिकहँउगाहिंगोसाईं ॥ मैं तोहि अर्थ कहौं समुझाईं ॥ उत्तर दिशि एक नगर बिशाला । राज करै तहं मदन गोपाला ॥ तहां शैल एक परम बिशाला । सतयोजन परमान कराला ॥ तापर भानु किरन नहिं पावै । यह बिधि पुर उजियार जनावै ॥ निशा जोर सब पुर अंधियारा । उगै न रवि न होइ उजियारा ॥ तहांबास कलियुग कर होई । पाप मलेक्ष बसै तहं सोई । यह कारन तहं उगै न भानू मैं तोहि अर्थ कहा परमानू ॥ एकसमै अति अचरज भयऊ । नारद मुनि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तहवां चलि गयऊ ॥ देखा नगर सक
ल अंधियारा । धर्म कथा कर कहूं न
चारा । फिरि२ सकल नगर मुनि दे-
खा॥अघ व्यवहार अवर नहिं लेखा।
मन महं नारद कीन्ह बिचारा । कत
आये यह पुर अंधियारा ॥ अस कहि
नारद कोपेउ जबहीं । दीन्हे श्राप न-
गर कहं तबहीं ॥ कुष्ठी होहु सकल नर
नारी । धर्म कथा कर नाम बिसारी॥
कुष्ठ बरन भासव के अगा । आठों
गात कुष्ठ तन भंगा ॥ रहा न कोऊ
कुष्ठ विहीना । जबहिं श्राप मुनीश्वर
दीन्हा ॥ ब्याकुल भये सकल नर ना-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

री । त्राहि२ सब कराहिं पुकारी ॥ श्राप देइ उत्तर कहं आये । अब हम यह मुनि चरित सुनाये । श्राप अनुग्रह उन कर होही ॥ कहन लगे नारद मुनि तबहीं॥ अंग बरन मुनि देखा सबहीं । उग्र शाप कब होइहि वोही ॥ कहहु बुझाय कृपा निधि मोहीं । अंग बरन मुनि देखा कैसा । हंस समान श्वेत भा वैसा॥ बिदा होइ मुनि घर कहं आये। हरषित होइ भानु गुण गाये ॥ धनि आदित काया केराजा । ज्योति जासु तिहुं लोक बिराजा॥ अस्तुति रबिकर नारद गाये । कोटि बिप्र तब नेवतप

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ठाये ॥ भोजन सुधा समान बनाये। प्रेम सहित सब विप्र जेवाये अश्व मध मुनि करन सो लागे। तीनि लोक के दारिद भागे ॥ सब कहं नारद नेवतपठाये ॥ निज२ वाहन चढि सब आये ॥ ब्रह्मा विष्णु अवर त्रिपुरारी। आये सबै सहित सुत नारी ॥ बहु प्रकार मुनि सबहि जेवाये। हरषित होइ भानु गुन गाये ॥ वेद पढ़ै मुनि गिरा सुधारी ॥ हरषित मंगल गावहिं नारी चन्दन अक्षत दल पकवाना। पूजा करहिं मुनी धरि ध्याना ॥ ब्रह्मादिक मु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नि लोक सिधाये । प्रेम पुलिक सूरज गुन गाये ॥

यज्ञकीन्हमुनिवरसविधि,सोभाबरनिनजाय ।
देवकोटि तैंतीसतहं हरषि भानुगुनगाय ॥

इतिश्री सूर्य महात्म्य नारदयज्ञबरननो: अष्टमो अध्याय: । ८

चौ० जो नर धरै सूर्य पर ध्याना । ताकर होइ पुत्र कल्याना ॥ जो रवि कथा सुनै मनलाई । तापर दिनकर होहिं सहाई ॥ धन्य प्रताप आदित बलवाना । तेज प्रतापी अगिनिसमाना ॥ गिरिजा शंभु सुनु शैल कुमारी । कहा भानु चरित विस्तारी ॥ कहन लगे शिव कथा रसाला । जेहि बिधि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दक्षिण उगाहिं कृपाला॥ बरनन करहिं अर्थ समुझाई। सुनहु सत्य गिरिजा मनलाई॥ दक्षिण दिशि एक नगर अनूपा। जयमल विप्र तहांके भूपा॥ हर्षित भजन करै दिन राती। तहां करै वहु सुख प्रभु भांती॥ यहि विधि प्रभुकी ज्योति बिराजै। अनहद नाद घंट धुनि वाजै॥ तैतीस कोटि देवता तहवां। श्रीसूरज के आश्रम जहवां। दक्षिण दिशि काशि प्रयागा। तहांके लोग सकल वड भागा॥ दोउ बल-भद्र सहोदर संगा। तहां बहै सरिता वर गंगा॥ कृपा सिंधु प्रभु पमर अ-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गाधा । निशि दिन सुमिरै नाथ अबाधा ॥

दो०दक्षिणदिशापुनीतहैसुनहुउमाचितलाय ।
प्रथम अर्थजैसे अहैतैसे कहो बुझाय ॥

चौ० कली वितत जबहीं होई जैहैं । मानुषकी मानुष धरि खैहैं ॥ तब प्रभु धरि अवतार कलंकी । मानुष तन होई जैहैं पंखी ॥ तब दक्षिण दिशि उदय कराहीं । आगिल अर्थ कहौ तुम पाहीं ॥ धर्म कथा होइहि दिन राती ॥ नेम धर्म करि हैं वहु भांती विप्र जेवाइके होम करावै ॥ वांही

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भस्म लै अंग लगावै । विप्र जेवाइ आप तब खैहैं ॥ निशि दिन कथा सूर्यकी गैहैं । एह प्रति कमला करहिं निवासा ॥ धर्म कथा तहं होहि प्रकासा । मिथ्या बचन कोऊ नाहिं भाषै । धर्म बिचार भानु तप राषै ॥

द्वादश कलाउगिहै तबहीं आदि अंततबआइ। पूर्वजन्मके सकल अघ कहतसुनत अघजाइ ॥

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्ये कलिवर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥९॥

चौ० बोलीतबहिंउमाहरषाई । दाया करि कछु कहौगोसाईं ॥ जेहिसेवाकरि नरसब पावैं । जाहिभजे सुभगति नर पावैं ॥ रवि महिमाअति अगम अपारा कहिये नाथ कथा विस्तारा ॥ जाकी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मुक्तिमिलै सबधानी। सो प्रसंगसब क
हहुबखानी॥ अति उत्तम जसरबिअव
गाहा। सोप्रभुबरनो सहित उछाहा॥
कसस्वरूपकिमि रूपहि करहीं। किमि
शीतलकिमितेजहि धरहीं॥ केहिप्रति
मासन उदै गोसाईं। किमिव्रत करि
नर मोक्षहि पाई॥ सोइ सत्य सबकहो
विचारी। जेहि सुनि होइ ज्ञान अधि-
कारी॥ असकहि शिवपद बंदन कीन्हा
हरषि शम्भु हरि सुमिरत लीन्हा॥

दो० धन्यशगिरिजासुनहुपूछेहुजगहितलाग।
रवि चरित्र पावन परम सुनहु चरित अनुराग

चौ० रविमण्डल करसुनु विस्तारा।
जेहि विधितनअस्थूलअपारा॥द्वादश

श्रीलक्ष्मीधर - विद्यामन्दिर.
देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
व्यवस्थापक- पं. चक्रधरजोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सहस्रयोजनचहुंफेरा । रविमंडलजान
हुसुभडेरा । अतिउतंगजगतेजअपारा
गये समीप न होइ उबारा । दससहस्र
रवि नयन गनायं । अति विशाल क-
हि देवगनाये ॥ उदैहोत त्रिभुवन तम
भागै । तास नहम नित २ वरमांगै ॥
पारब्रह्मसो छमहिं जानहिं । सुमिरत-
होइनाम उरध्यानाहिं ॥ उदय होत वि-
धि रूपाहिं जानहु । मध्य विष्णुको रूप
बखानहु ॥ संध्यारुद्रहिरूपबखानहु ।
तीनकाल तिहुं मूरति जानहु ॥ यहअ
नुमानसदापदवंदिय । निश्चै करि वि-
श्वासअनंदिय ॥ पापहि गतिते नर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

बडभागी। जाके चरन कमल लयलागी।

यह विधिते जानहुं उमा रवि पूजा जेंहिहेतु।
सिद्धतासु मन कामना चारि पदारथ हेतु॥

चौ० और सुनहु प्रभुके प्रभुताई। सूर्य कथा सव वेदन गाई॥ द्वादश तनधर वेद वखानै॥ द्वादशकला उदित विधानै। द्वादशमासके द्वादश नामा॥ उदँकरैरविजगसुखधामा। माधव मास मासमहंनीका। कहश्रुति सव मामन करटीका॥ मकर उदय कहि वरुनसुनामा। सुमिरत ताहि होइ मनकामा। फागुन कुम्भ मकर शुभ नामा। भक्तिज्ञान ध्यान करजामा॥ चैतमीन रवि उदय कराहीं। नामवेद

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जगजानैंताहीं ॥ माघहिमेषभानु तप होई ॥ उच्चनाम रवि करै हैसाईं ॥

इन्द्रनाम वृषज्येष्ट तप सब प्रकार सुखदाहि ।
रवि अषाढ़तप कर मिथुन तासु नामजगलेहि ॥

चौ० सावन करकं नामरविकेरा । भादों सिंहभवनकरफेरा ॥ आश्विक कन्याराशिविराज । सुवर्णरतनासशुभ छाजै ॥ कातिकतुलादिवाकर नामा उदय कराहिं रवि जग सुखधामा ॥ मार्गशीर्ष वृश्चिकहिं सहाई । मित्रनाम सब जबसुखदाई ॥ पूस मास धनराशि गनाये । विष्णु सनातन नाम कहाये यह विधि द्वादश मासन माहीं । मास मास प्रति उदय कराहीं ॥ औरौ वेद

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कहै असवानी । मास २ प्रति उदय भवानीं ॥

॥ दोहा ॥

सुनहुउमा यह सकल दिन दिनकर यह विधिध्यान
याहि करशुभ गति मिलै गावें वेद पुरान ॥

इतिश्रीमहापुराणे सूर्यमहात्म्य द्वादशादित्यवर्णनोनामदशमोऽध्यायः

चौ० मनथिर करिसुनुशैल कुमारी व्रतरवि ध्यान कहौं विस्तारी ॥ शनि वासर लघु भोजन कीजै । अरु आदितकर धरम करीजै ॥ दंतकाष्ट पहिले करिलीजै । तब अस्नानहिं चित्तहि दीजै ॥ उदय होतरवि अंजलिदई । सूर्य प्रदक्षिणाकरिये सई ॥ तब धोती अरु असल उपानी । होम करै पढि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मंत्रउपनां ॥ बंदि दंडवतरवि कहंकरई दृढ विश्वास चित्तमहं धरई ॥ अगहन ते यह ब्रतबखाना । ताकर विधिवत करिसब आनां ॥ अगहनमें तुलसी दल खंडित । ब्रत करै सूक्षमते पंडित पूसमासगोघृतपलतीना अति पुनीत काया करदीना ॥

॥ दोहा ॥

माघ मास ब्रत जो करै, मुष्ठि तीन तिलखाय
वृत विधान जो करहिं नर ऋषि लोकहितें जाय

चौ० फागुनमास बरत सुखदाई । छीर तीन बल भोजन खाई ॥ चैत मास कर सुनहु विधाना । दहीतीन पल अधिकनआना ॥ बैशाख गोघृत

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गोबरआना। तील पलातें अधिक न आना ॥ जेठ मासकर भाव विवादी तीन अंजुली जल अभ्यादी ॥ मासअसाढ वरत कहं धरई। तीन मिरिचआ लवन करई ॥ सावन मास वरत रवि नीका। खांड तीनि पल है सबहीका॥ भादों मास अमित सुखदाई। त्रैअंजुलगोमूत्रहिखाई ॥ आश्विनमासवरत शुभआने॥फल कदलीकेतीन बखानै कातिकमास वरत जो करई। त्रैफल हव्यआनिकैं धरई ॥

॥ दोहा ॥

यह विधि बारह मास लगि विधिविधानकर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लीन्ह । रवि पूजा विधिवत सहित मुनि दुर्लभ सो दीन्ह ॥ तुमसम सुब्रत बिचार नित सत्यसो प्रगटे आइ । अब जो कछु कहिहौ उमा सोवरनो हरखाइ ॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्येसूर्यव्रत वरणोनाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

चौ० सोसुनि उमा हरष अति भई । माया मोह जनित सबगई ॥ धन्य २ सुनु शंकर स्वामी । कथा कहउ हरषित निजबानी ॥ जे करता रविपूजन लोगा । कराहिं आनन्द मिलै सबभोगा कथा अवर कछु कहा गुसांई । सो तुमसों अब करो सहाई ॥

इतिश्रीमहापुराणे सूर्यमाहात्म्ये सूर्य कथासम्पूर्णम् ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सूचना.

इस पुस्तकालय में नीचेलिखी पुस्तकें बिक्री के लिये मौजूद हैं।

सर्वदेव पूजा	कालभैरवाष्टक
संकटाष्टक	पार्थिवपूजा
अन्नपूर्णाष्टक	नवग्रह स्तोत्र
विश्वनाथाष्टक	गणपतिस्तोत्र
सहस्र शीर्षा	महामृत्युञ्जयस्तोत्र
बद्रीनाथ स्तोत्र	बिल्वाष्टक
लिंगाष्टक	हनुमान ज्योतिष
विश्वनाथ आरती	लावनी मरहटीख्याल
गंगाष्टक १	दानलीला
बजरंगबाण	जगन्नाथाष्टक
शिवरामाष्टक	स्वप्नविचार

श्यामलाल श्रीकृष्णलाल-श्यामकाशी प्रेस मथुरा